जैविक उत्पाद से स्वास्थ्य जीवन और समृद्धि :
अशोक कुमार मेहता
कृषि विज्ञान केन्द्र, पलामू

नाम	:	अशोक कुमार मेहता
पिता का नाम	:	स्व. सुखदेव मेहता
ग्राम	:	गेदुराही
पंचायत	:	गेदुराही
प्रखंड	:	हुसैनाबाद
जिला	:	पलामू
शैक्षणिक योग्यता	:	इंटरमीडिएट
कुल भूमि	:	2.0 एकड़

अशोक कुमार मेहता की कहानी न सिर्फ खेती की जमीन पर बदलाव लाती है, बल्कि शरीर और सोच में भी बुनियादी परिवर्तन की मिसाल है। कभी रासायनिक खेती करने वाले अशोक आज जैविक खेती के प्रचारक और स्वस्थ जीवन की मिसाल बन चुके हैं। वर्ष 2016 में मियादी बुखार और लगातार खराब सेहत ने उन्हें बी.पी., शुगर, ई.एस.आर., लिवर संक्रमण जैसी गंभीर बीमारियों से जूझने को मजबूर किया। रांची के चिकित्सकों ने बताया कि उनके शरीर पर दवाओं के असर नहीं होने का मूल कारण रासायनिक खाद और रसायन युक्त भोजन है। महीनों इलाज के बाद वे भले ही स्वस्थ हुए, लेकिन उनके मन में यह सवाल पक्का हो गया की खेती का जहर मानव की मौत की वजह बन सकता है। उन्होंने वर्ष 2020 से पूरी तरह जैविक खेती कृषि विज्ञान केंद्र, पलामू और आत्मा, पलामू के मार्गदर्शन में शुरू की। उन्होंने पारंपरिक फसलों के साथ साथ हाई वैल्यू वाली स्वस्थ और जैविक फसलों से शुरुआत की जैसे सोनामति गेहूं, काला गेहूं, काला नमक बासमती धान, काला धान, सब्जियां एवं दलहन, चना, मूंग, मूंगफली, मसूर, सरसों, मक्का इत्यादि। पारंपरिक विधि के खेती से औसतन 2 एकड़ जमीन से केवल ₹1 लाख वार्षिक आमदनी होती थी। अब जैविक खेती से ₹3 लाख की आमदनी अर्जित हो रही है एवं बाजार में जैविक उत्पाद की मांग अधिक होने से उत्पाद बगैर किसी परेशानी के आराम से बिक भी जाते हैं। ये सब तभी संभव हो सका जब अशोक अपने खेतों में जीवामृत, बीजामृत और घन जीवामृत का नियमित और प्रभावी प्रयोग लगातार करते रहे जिससे मिट्टी की सेहत और फसल की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ एवं उत्पादन बढ़ा, और खेती टिकाऊ हो गई।

Scanned with OKEN Scanner

इनका सफर दर्शाता है कि स्वास्थ्य, पर्यावरण और आय – तीनों को एक साथ सुधारा जा सकता है। ये अब क्षेत्र के अन्य किसानों को भी जैविक खेती की ओर प्रेरित कर रहे हैं। इनकी कहानी न सिर्फ जैविक खेती के आर्थिक लाभ दिखाती है, बल्कि यह भी सिखाती है कि जीवन की गुणवत्ता और खेती की गुणवत्ता साथ–साथ चलती है।

Scanned with OKEN Scanner